



जै वक खेती समय की आवश्यकता

श्रीमान सत्यवीर सिंह, जेबीटी अध्यापक

हमारे प्राचीन समय में हर तरफ जै वक खेती ही होती थी। इसी लये मनुष्य है वे प्राचीन समय में बहुत बलवान होते थे। ले कन आज के समय हम देखे तो हम पाते है क मनुष्य जाति में अनेक प्रकार की बीमारियां ग्रहण कर रही है। बीमारियों का अगर हम मुख्य कारण जाने तो हम पाते है क इसका मुख्य कारण है क मनुष्य की दिनचर्या जो क आज पूर्ण रूप से बदल गई है।

पुराने समय पर हमारी आवश्यकता बहुत सी मत होती थी। ले कन आज के समय हमारी अनेक प्रकार की आवशकतायें है। इसी के साथ ही मनुष्य की आहार की आदतें है। आज अगर हम देखे तो हम पाते है क देश में बड़े पैमाने पर खाद बीज व दवाईयों का प्रयोग हो रहा है। इसका मुख्य कारण है क मनुष्य में लालचीपन आ चुका है और वह ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने की चाह में बहुत बड़े पैमाने पर खाद बीज का प्रयोग कर रहा है ता क वह ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमा सके।

इसके कारण से ना केवल पर्यावरण वषैला हो रहा है वरन इसके साथ ही मनुष्य में भी अनेक प्रकार की बीमारियां आ रही है। जिसमें से प्रमुख है कैंसर, लीवर व



कड़नीए सांसों कीे तकलीफ प्रमुख है। जरूरत है क मनुष्य जाति को बचाया जाये तथा पर्यावरण को सुर क्षत रखा जाये।

हमारे जीवन के लये तीन चीजें महत्वपूर्ण है उनमें है रोटीए कपड़ा व मकान है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है रोटी। ले कन यही रोटी आज के समय सबसे वषैली हो चुकी है।

अब वकल्प है क इससे कस प्रकार से बचा जाये और क्या कया जाये। खेती में जब हम बड़े पैमाने पर कीटनाशक प्रयोग करते है तो इससे पर्यावरण भी जहरीला होता है। इसके साथ ही हम तो खुद अनेक प्रकार की बीमारियों को दाद देते ही है इसके साथ ही हम अपने आस पास वालों को भी बीमारियों में शा मल कर रहे होते है। अगर जांच की जाये तो बड़े पैमाने पर कूछ क्षेत्रों में तो यह भी निकल सकता है क जो हम खाद्य पदार्थ व अनाज प्रयोग कर रहे है वह बड़े पैमाने पर प्रयोग करने लायक ही नहीं है।

अब दूसरा वकल्प यह है क इससे हम कस प्रकार से बच सकते है और अपनी तथा अपने परिवार की लाईफ बेहतर बना सकते है। खादय पदार्थ की बीमारियों से बचने का एकमात्र तथा सही वकल्प है क हम जै वक खेती की तरफ जाये। जै वक खेती से हमारा तात्पर्य है क पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचा कर फसल उत्पादन कया जाये और अनेक प्रकार की बीमारियों से बचा जाये।

जै वक खेती का प्रचलन वदेशों में बहु पहले से ही है ले कन देश में भी पछले 10 सालों मंे य बड़े पैमाने पर हुआ है। इसका कारण यह है क इससे ना केवल हमें



महंगे खाद बीजों के बिल से आजादी मल जाती है वरन इसके साथ ही हमें बिना कीटनाशकों वाली फसल प्राप्त होती है जिसकी काफी इस समय मांग है और इसके साथ ही इसकी कीमत भी इस समय काफी ज्यादा है।

जै वक खेती से ना केवल हम कीटनाशकों से आजादी पा सकते है वरन इसके साथ ही हम भूम की उर्वरा शक्ति को भी बना कर रख सकते है और यह भूम फर हम आने वाली पीढ़ियों के लये छोड़ सकते है। इसके साथ ही यह खेती हमारी जेब पर भी भारी नहीं पड़ती है। जै वक खेती के लये हमें सर्फ हरी खाद आदि पर ही निर्भर होना पड़ेगा।

जो क हमारे आसपास आसानी से े मल जाती है और यह भूम की उर्वरा शक्ति बनाये रखने में भी सहायक है। इसी के साथ ही जै वक खेती की मांग ना केवल देश में है वरन वदेशों में भी है। देश में ही जै वक फसल के रेट आम फसलों से दोगने है। इसके साथ ही इसकी डमांड इस समय तेजी से बड़ रही है।

अगर हम जै वक खेती की बात करे तो हम पाते है क लगभग सन 2001 में जो जै वक खेती का आंदोलन मध्य प्रदेश से आरंभ हुआ है वह आज के समय जनआंदोलन बन चुका है और आज के समय हर शहर में इसको बड़े पैमाने पर अपनाया जा रहा है। इसी के साथ ही जै वक खेती के लये हमें बेचने के लये बाहर जाने की भी जरूरत नहीं पड़ती है और हम अपने आसपास ही इसको आसानी से बेच सकते है।



आज अकेले मध्य प्रदेश में ही कसी ना कसी पैमाने पर 3000 से अधिक गांवों में जैवक खेती हो रही है। जैवक खेती की सहायता से ना केवल फसल उत्पादन बेहतर हो रहा है वरन इसके साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति भी बेहतर हुई है। इसके साथ ही इससे समय और पैसे की भी बचत हो रही है।

हमें अनेक प्रकार की बीमारियों से भी आजादी मिल रही है और हम कैंसर जैसे ख़ातक रोगों से भी बच रहे हैं। अगर हम यह कहे कि जैवक खेती समय की आवश्यकता भी है और जरूरत भी तो ग़लत नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ASSOCHAM and Resurgent India. (2016). Transport & Logistics in India: Challenges. Opportunities & Policy Issues. New Delhi, India.
2. Chatterjee, T., & Ganesh-Kumar, A. (2016). Geographic Neighbourhood and Cluster Formation: Evidence from Indian Agriculture. *The Journal of Development Studies*, 52(11), 1577-1592. <https://doi.org/10.1080/00220388.2016.1166211>.
3. Dev, M. S. (2014). Small farmers in India: Challenges and opportunities. Indira Gandhi Institute of Development Research, Mumbai, India.
4. Mittal, S., Kaur, G., & Vishwakarma, G. S. (2014). Effects of environmental pesticides on the health of rural communities in the Malwa Region of Punjab, India: A review. *Human and Ecological Risk Assessment: An International Journal*, 20(2), 366-387. www.scholink.org/ojs/index.php/rem Research in Economics and Management Vol. 3, No. 2, 2018 88 Published by SCHOLINK INC. <https://doi.org/10.1080/10807039.2013.788972>.
5. Murgai, R., Ali, M., & d Byerlee, D. (2001). Productivity growth and sustainability in pos—Green Revolution agriculture: The case of the Indian and Pakistan Punjabs. *The World Bank Research Observer*, 16(2), 199-218. <https://doi.org/10.1093/wbro/16.2.199>.



6. Pandey, J., & Singh, A. (2012). Opportunities and constraints in organic farming: An Indian perspective. *Journal of Scientific Research*, 56, 47-72.
7. Pearse, A. (1980). *Seeds of Plenty, Seeds of Want: Social and Economic Implications of the Green Revolution*. Revisiting Sustainable Development, 139.
8. Ramesh, P., Panwar, N. R., Singh, A. B., Ramana, S., Yadav, S. K., Shrivastava, R., & Rao, A. S. (2010). Status of organic farming in India. *Current Science*, 98(9), 1190-1194. Rana, R. S., Singh, M., Ramesh, A., & Pathania, R. (2016). Agro-metrological investigation of bumper apple productivity in Himachal Pradesh, India. *Journal of Applied and Natural Science*, 8(1), 133-139.
9. Sarumathi, S. (2017). A study on consumer's knowledge and willingness to pay for organic food products (in Pondicherry region). *International Journal of Innovative Research in Management Studies (IJIRMS)*, 1(12), 35-40.
10. Sharma, S., Shukla, R., Leua, A., Parmar, G., & Chaudhari, B. (2016). Consumers' awareness and opinion regarding organic food products in south Gujarat. *International Journal of Farm Sciences*, 6(3), 206-215.
11. Singh, R. B. (2000). Environmental consequences of agricultural development: A case study from the Green Revolution state of Haryana, India. *Agriculture, ecosystems & environment*, 82(1-3), 97-103. [https://doi.org/10.1016/S0167-8809\(00\)00219-X](https://doi.org/10.1016/S0167-8809(00)00219-X)
TechSci Research. (2017). *Global Organic Food Market Forecast and Opportunities, 2020*. Manhattan, New York.